तीर्थंकर अरहंत श्री सीमंधर जिन पूजन

(रचियता- राजेश कासलीवाल, उज्जैन)

स्थापना

(अडिल्ल)

दर्श ज्ञान सुख वीर्य चतुष्टयवंत है ।
घाति कर्म विनाश हुए अरहंत है ।
पूर्व विदेह विराजे तीर्थंकर प्रभो ।
सीमंधर जिनराज वीतरागी विभो ।

(दोहा)

मन वेदी में अवतरो, तिष्ठो श्री जिनराज ।
रहो प्रभु मम सन्निकट, पाउँ निजपद राज ।

ॐ ह्रीं श्री सीमंधरजिन! अत्र अवतर अवतर संवीषट् आह्वाननम् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनम् । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम् ।

(अवतार)

तुमको जो जाने नाथ, मोह विलय होता ।
ज्यों निर्मल जल का साथ, बाहिर मल खोता ।
सीमंधर श्री जिनराज, अमृत बरसाए ।
श्री कुंदकुंद ऋषिराज, परमागम लाए ।

ॐ ह्रीं श्री सीमंधरजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

उपयोगी में उपयोग, क्रोध प्रवेश नही ।
चंदन शीतलता योग, तपन कलेश नही ।
सीमंधर श्री जिनराज, अमृत बरसाए ।
श्री कुंदकुंद ऋषिराज, परमागम लाए ।

ॐ ह्रीं श्री सीमंधरजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।

अक्षत गुण का भंडार, परिणति में प्रगटा ।
मोहादिक राग विकार, निज बल से विघटा ।
सीमंधर श्री जिनराज, अमृत बरसाए ।
श्री कुंदकुंद ऋषिराज, परमागम लाए ।

ॐ ह्रीं श्री सीमंधरजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

निज ब्रम्ह मगन जिनराज, मदन प्रहार नही ।
सुमनों में सौरभ राज, कंटक रार नही ।
सीमंधर श्री जिनराज, अमृत बरसाए ।
श्री कुंदकुंद ऋषिराज, परमागम लाए ।

ॐ ह्रीं श्री सीमंधरजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

निज आनंद रस का भोग, परिणति में विलसे ।
रे नष्ट क्षुधा का रोग, दोष सभी विनशे ।
सीमंधर श्री जिनराज, अमृत बरसाए ।
श्री कुंदकुंद ऋषिराज, परमागम लाए ।

ॐ ह्रीं श्री सीमंधरजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

प्रज्ञा अविरल उद्योत, आदि अंत नही ।
कैवल्य दिवाकर ज्योत, शक्ति अनंत कही ।
सीमंधर श्री जिनराज, अमृत बरसाए ।
श्री कुंदकुंद ऋषिराज, परमागम लाए ।

ॐ ह्रीं श्री सीमंधरजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

प्रभु किया निजातम ध्यान, भस्म सभी विकृत ।
सुरभित चैतन्य वितान, जड़ रज रे अकृत ।
सीमंधर श्री जिनराज, अमृत बरसाए ।
श्री कुंदकुंद ऋषिराज, परमागम लाए ।
ॐ ह्रीं श्री सीमंधरजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

शुद्धातम साधन काज, फल अनुपम पाया ।
प्रभु मिले मुक्ति साम्राज्य, तेरे दर आया ।
सीमंधर श्री जिनराज, अमृत बरसाए ।
श्री कुंदकुंद ऋषिराज, परमागम लाए ।
ॐ ह्रीं श्री सीमंधरजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

प्रभु दर्श ज्ञान चरित्र, वीर्य अनंत लहा ।
नव केवल लब्धि पवित्र, वैभववान महा ।
गुण तेरे लख प्रभु आज, मम मन उमगाया ।
अरहंत बनूं जिनराज, अर्घ्य बना लाया ।
सीमंधर श्री जिनराज, अमृत बरसाए ।
श्री कुंदकुंद ऋषिराज, परमागम लाए ।
ॐ ह्रीं श्री सीमंधरजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जयमाला

(दोहा)

सीमंधर जिनराज अहो, तीर्थनाथ अरहंत ।
भाव सहित आराधना, होय भवार्णव अंत ।

(पद्धरि)

जय-जय गुणनायक सीमंधर, जय-जय वैदेही तीर्थंकर ।
जय तुम गुण शट चालीस कहे, जय समवशरण नित साथ रहे ।
जय गर्भ जन्म तप ज्ञान अरे, कल्याणक उत्सव देव करे ।
जय जन्मत समकित साथ लिये, जय अतिशय दश त्रय ज्ञान हिये ।

जय आतम साधन भावन से, जय मुनि बन कानन आप बसे ।
जय श्रेणी चढ़ सब राग हरा, जय केवलज्ञान महान वरा ।
जय अंतर के सब कष्ट हरे, जय घाति चतुष्टय नष्ट अरे ।
जय दोष अठारह नाश किये, जय भाव विभाव विनाश किये ।

जय निजपुर मे विश्रामी हो, कृतकृत्य हुए जगनामी हो ।
आतम गुण पूर्ण खिले जब ही, अरहंत हुए प्रभुवर तबही ।
जय दर्शन ज्ञान अनंत लहा, जय जय सुख वीर्य अनंत महा ।
जय वीतराग सर्वज्ञ प्रभो, जय हितकर जग के नाथ विभो ।

जय जय सर्वांग वचन झरते, जय जय गणधर जिन श्रुत रचते ।
जय कुंदकुंद को दूत बना, जय ज्ञान अथाह दिया इतना ।
जय भरत क्षेत्र के भाग्य बड़े, जय कुंद ऋषि जिन सूत्र गढ़े ।
परमागम पाकर धन्य हुए, जय जन मन सब चैतन्य हुए ।

हे प्रभुवर ! तेरे दिव्यवचन, हे प्रभुवर तेरा दिग्दर्शन ।
रत्नत्रय निधि निज प्राप्त करें, तेरे पथ चल हे आप्त अरे ।
तुम गुण चिंतत निज पर दरशे, तुम गुण चिंतत सब मोह नशे ।
तुम ज्ञान स्वभावी सीमंधर, हम ज्ञान स्वभावी सीमंधर ।

ॐ ह्रीं श्री सीमंधरजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये जयमालामहार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

(दोहा)

सीमंधर निज सीम में, आतम भी निज सीम ।
सीमंधर को जानकर, निज गुण लखो असीम ।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)